कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नही लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ✓

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 18-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।164/2018

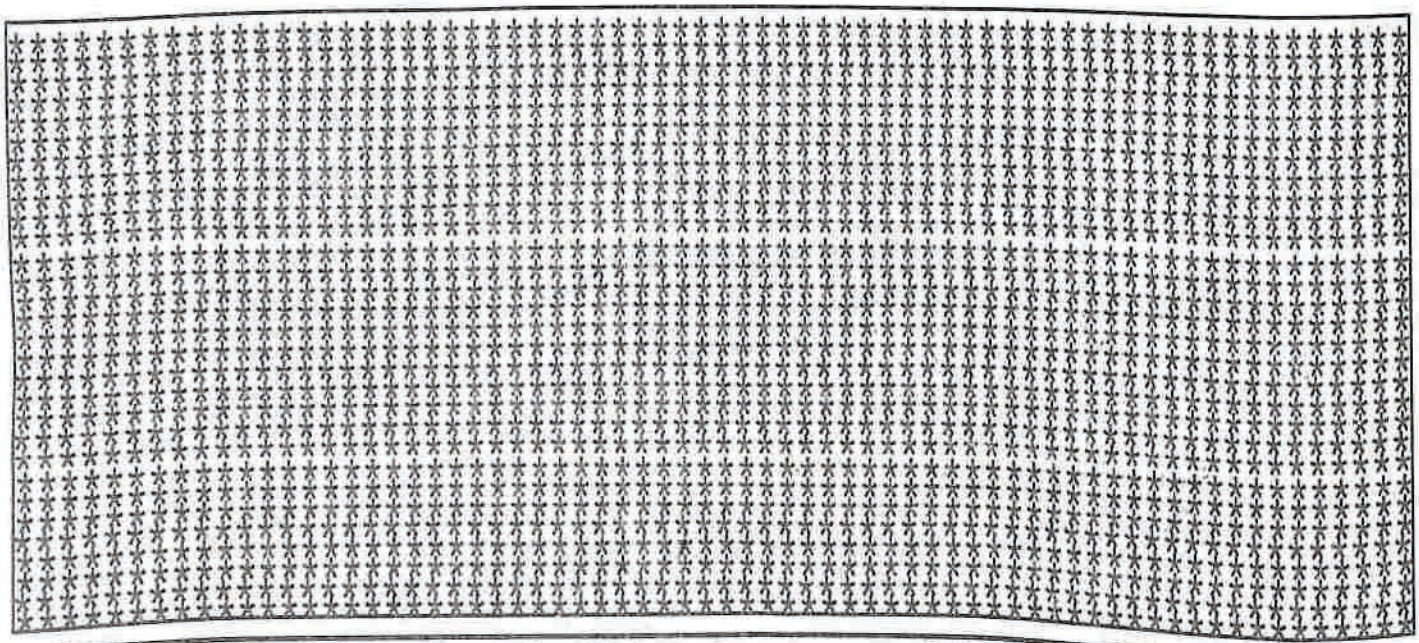

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाडें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1. प्रसङ्ग ⇒

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के अध्याय - 8 'कर्मयोगी स्वामी केशवानन्दः' से लिया गया है। जिसके रचयिता डॉ० विक्रमजीत है। इस गद्यांश मे डॉ० विक्रमजीत ने स्वामी केशवानन्द के चरित्र की विशेषताएँ बतायी है।

हिन्दी अनुवाद ⇒

स्वामी का जीवन सभी धर्मों के सद्भाव का उदाहरण है। यह जाट - जाति में पैदा हुए लेकिन सिखगुरु गुरो नानकदेव के पुत्र श्री चन्द द्वारा चलाए गए उदासीसम्प्रदाय में दीक्षित हुए। गुरु ग्रन्थ के उत्तम पाठी हुए। ग्यारह वर्ष की साधना से सात सौ पृष्ठो का सिक्ख इतिहास का लेखन किया। विभाजन काल में हिंसा के आचार आचरण में पीडित मुसलमान भाइयों का उपचार करवाया।

विशेष ⇒

(i) इस गद्यांश की भाषा सरल, सरस व मधुर है।

(ii) सन्धि ⇒ गुरु ग्रन्थस्योत्तमः → ग्रन्थस्य + उत्तमः [गुण सन्धि]

(iii) शब्द रूप ⇒ पुत्रेण - पुत्र - पुल्लिंग - तृतीया - एकवचनम्

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

2. प्रसङ्ग =>

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के अध्याय - 12 'मरुसौन्दर्यम' से लिया गया है। यह पाठ मूल रूप से पण्डित विद्याधर शास्त्री द्वारा विरचित है। इस पद्यांश में उन्होंने मरुभूमि की विशेषता बतायी है।

हिन्दी अनुवाद =>

सुन्दर वर्ण (स्वर्ण स्वरूप) वाला मरुप्रदेश जिसके द्वारा नहीं देखा गया है, क्या उसके द्वारा कहीं पर ऐसा सुन्दर दृश्य देखा गया है? अर्थात नहीं देखा गया है। सुमेरु पर्वत के शिखर मरुभूमि मे स्पष्ट शोभा देते है। उन्हें काली शिलाओं मे नहीं खोजना चाहिए।

विशेष =>

i) इस पद्यांश की भाषा सरल, सरस व मधुर है।

ii) शब्द रूप => तेन - तत - पुल्लिंग - तृतीया - एकवचनं
मरौ - मरु - पुल्लिंग - सप्तमी - एकवचनं
शिलासु - शिला - स्त्रीलिंग - सप्तमी - बहुवचनं

3. प्रसङ्ग : →

~~प्र~~ श्लोकोऽयम अस्माकम

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

'स्पन्दना' इति पाठ्यपुस्तकस्य 'स्वराष्ट्र-गौरवं' इति पाठात उद्धृतः। श्लोकोऽयम मूलतः 'मनुस्मृतिः' इति ग्रन्थात संकलितः। श्लोकेऽस्मिन नीतिकारः भारतस्य मनीषां वर्णयति। श्लोकेऽस्मिन नीतिकारः भारतस्य श्रेष्ठजनानां चरित्रस्य ~~वैशिष्य~~ वैशिष्टयम वर्णयन कथयति-

व्याख्या=>

भारतदेशे जातानाम श्रेष्ठजनानां पार्श्वति विश्वस्य सर्वे मानवाः आत्मनः गुणव्यवहारादीन शिक्षरेन। प्राचीनकाले विश्वस्य सर्वे जनाः भारतदेशस्य श्रेष्ठजनानां पार्श्वति स्वचरित्रं शिक्षन्ते स्म।

विशेषः=>

i) अस्य पद्यांशस्य भाषा सरला, सरसा मधुरा च अस्ति।

ii) सन्धि=> ① एतद्देशप्रसूतस्य => एतत + देशप्रसूतस्य [जश्त्व सन्धि]

② सकाशादग्रजन्मनः => सकाशात + अग्रजन्मनः [जश्त्व सन्धि]

iii) शब्द रूप => ① पृथिव्यां => पृथ्वी- स्त्रीलिङ्ग- ~~षष्ठी~~- सप्तमी- एकवचनम

② सर्वमानवाः => सर्वमानव - पुल्लिंग - प्रथमा एकवचनम

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

5. प्रसङ्गः :⇒

नाट्यांशोऽयम् अस्माकम् 'स्पन्दना' इति पाठ्यपुस्तकस्य 'स्वदेशं कथं रक्षेयम्' इति पाठात उद्धृतः। नाट्यांशोऽयम् मूलतः 'एकाङ्की संस्कृत नवरत्न सुषमा' इति ग्रन्थात संकलितः। नाट्यांशोऽयम् मूलतः नारायणशास्त्री कांकरेण विरचितः अस्ति। नाट्यांशेऽस्मिन् महाराणा प्रतापस्य नैराश्यात स्वदेश रक्षणे असमर्थस्य वेदना वर्णितः। आर्थिक संकटात निराशः प्रतापः स्वदेशं परित्यक्तुम दृढ संकल्पितः अस्ति।

व्याख्या =>

प्रतापः - अरे धिक् माम् प्रतापम्। यदि अहं स्वदेशं रक्षितुं असमर्थः अस्मि, स्वदेशाय किमपि न कर्तुं शक्नोमि, तदा अत्र मेवाडराज्ये निवासेन किं प्रयोजनम्। [दीर्घं निः श्वसिति]

[तदा कोऽपि राजन्यः सामन्तः प्रवेशं करोति।]

सर्वदारः - [नृपोचितम अभिवादनं कृत्वा]
विजयतु विजयतु महाराजः।

प्रतापः - [दीर्घं निः श्वसम् त्यजन् आननं च उत्थाप्य]
हा धिक् माम्। बन्धो! किं त्वमपि विजयतां विजयतां इति विजयोद्घोषं विधाय मां लज्जयितुं इच्छसि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

सर्वदारः → हे अस्माकम् प्राणानाम् आश्रयभूतः! अपि एवं श्रीमान् प्रतापः कथयति? नं हि एवं तु असम्भवमेव। आत्मनः धर्म निर्वहनाय स्वातन्त्र्य सम्पादनाय च भवान् सर्वमेव तु कृतम्। स्वातन्त्र्याय असह्यानि कष्टानि अपि भवता सोढम्। भवतः तु सर्वदा एव जयः एव संभविष्यति।

विशेषः →

i) अस्य गद्यांशस्य भाषा सरला, सरसा मधुरा च अस्ति।

ii) सन्धि → राजोचितं = राजा + उचितं [गुण सन्धि]

iii) शब्द रूप → माम् ⇒ अस्मद् - द्वितीया - एकवचनम्

5(i) सर्वदमनस्य मणिबन्धे रक्षाकरण्डकम् आबद्धम् आसीत्।

(ii) कस्तूरी मृगात् जायते।

(iii) 'लोकहितं मम करणीयम्' इति गीतस्य रचनाकारः 'अधिरः भास्करः वर्णेकरः' अस्ति।

(iv) पञ्चतन्त्रस्य रचना 'विष्णु शर्मणा' कृता।

(v) अस्माभिः अनवद्यानि कर्माणि सेवितव्यानि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(iv) सर्वे प्राणिनः प्रियवाक्यप्रदानेन तुष्यन्ति।

6. ततस्तं कः भूत्वा दशति?

7. भवान् किं वदति?

8. कस्य सदा विजय एव भविष्यति?

9. मेघान् कुत्र अवलोक्य नन्दामि?
9. मेघान् कस्मिन् अवलोक्य नन्दामि?

10.(i) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जलमन्नम् सुभाषितम्।
मूढैः पाषाण - खण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते॥1॥

(ii) धन- धान्य- प्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्॥2॥

11 (क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं 'परोपकारस्य महत्त्वं' अस्ति।

(ख)(i) सर्वे स्वार्थं समीहन्ते।

(ii) गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) नदी स्वजलं स्वयं न पिबति।

(iv) स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम् विद्यते।

(v) परेषाम् उपकारः परोपकारः उच्यते।

(ग) (i) 'वृक्षाः फलानि प्रयच्छन्ति'। अत्र कर्तृपदं 'वृक्षः' अस्ति।

(ii) 'स्वार्थाय सर्वेऽपि जीवन्ति।" अत्र सर्वनामपदं 'सर्वः' ~~'सर्वम्'~~ अस्ति।

(iii) "मातृसमा उपकारिणी का विद्यते"। अत्र विशेषणपदं 'मातृसमा' अस्ति।

(iv) "अतः स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम्।" अत्र विशेष्यपदं 'जीवनम्' अस्ति।

12(i) महर्षिः = महा + ऋषिः = गुण स्वर सन्धि

(ii) शिवोऽहम् = शिवः + अहम् = उत्व विसर्ग सन्धि

13(i) गै + अकः = गायकः = अयादि स्वर सन्धि

(ii) शिवस् + च = शिवश्च = श्चुत्व व्यञ्जन सन्धि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

14(i) विशालभवनम् = विशालम् भवनम् इति ⇒ कर्मधारय समास

(ii) भरतशत्रुघ्नौ = भरतः च शत्रुघ्नः च ⇒ द्वन्द्व समास

(iii) दिनं दिनं प्रति = प्रतिदिनं = अव्ययीभाव समास

15(i) जलं = द्वितीया विभक्ति
कारण:→ 'विना' शब्दस्य योगे द्वितीय विभक्ति भवति।

(ii) शिवाय ⇒ चतुर्थी विभक्ति
कारण → 'नमः' शब्दस्य योगे चतुर्थी विभक्ति भवति।

(iii) मन्दिरम् ⇒ द्वितीया विभक्ति
कारण:→ 'उपर्युपरि' शब्दस्य योगे द्वितीया विभक्ति भवति।

16(i) श्रीधरः धनी आसीत।

(ii) शिक्षिका बालाः पाठं पाठयति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

17) i) बुद्धिमती = बुद्धि + मतुप् प्रत्यय

ii) पार्वती = पार्वत + ङीप् प्रत्यय

18) अहं श्वः देहलीं गमिष्यामि।

ii) तृणानि इतस्ततः विकीर्णानि आसन्।

iii) वयम् अधुनैव कार्यं सम्पादयामः।

19. जनेन ग्रामः गम्यते।

20. भगिनी वस्त्रं प्रक्षालयति।

21. अहं नगरं गच्छामि।

22. (क) i) महेशः रात्रौ सपाददशवादने शयनं करोति।

ii) 'शताब्दी' रेलयानं पादोनदशवादने जयपुरात् देहलीं गच्छति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

23i) कृषकः प्रातः क्षेत्रं प्रतिगच्छति।

ii) हट्टे तिस्त्रः महिलाः वस्तूनि क्रीणन्ति।

iii) अहं रोटिकाम् खादामि।

24.

सुनगरम्
18 मार्च 2019

प्रियमित्र ! कवीन्द्र !

कुशली सन् कुशलं कामये। मा॰ शि॰ बोर्डपरीक्षा सन्निकटे वर्तते। अहं समयसारणीं निर्मयि योजनया अधीयानः अस्मि। अधुना मम परिजनाः अपि मम सहयोगे रताः सन्ति। गुरवः सर्वोत्तान् अङ्कान् प्राप्तुम् विद्यालये विशेषकक्षां सञ्चालयन्ति। ममापि लक्ष्यं तदेव वर्तते। भवानपि योजनया एव अधीयानः स्याद। गतः कालः न पुनरायाति, इति सूक्तिं सर्वदा अपि स्मर।

भवन्मित्रम्
- नरेन्द्रः

25. महेशः - निरञ्जन ! श्वः रविवासरः, तव का योजना वर्तते।

निरञ्जन - अरे त्वं न जानासि? रविवासरे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सर्वे मिलित्वा वसतेः स्वच्छता करणीयास्ति।

महेश → अहो! उत्तमः विचारः। सर्वैः स्व: कदा गम्यते?

निरञ्जन: → प्रातः अष्टवादनात आरभ्य कार्यमिदं भविष्यति।

महेषः → पूर्वं कस्य भागस्य स्वच्छता करिष्यते?

निरञ्जन: → वामतः विद्यामानस्य अद्यस्य उद्यानस्य उद्यानस्य आदौ करिष्यामः।

महेशः → तेन तद रमणीयं सुन्दरं च भविष्यति।

निरञ्जन: → नीलीमाम स्वच्छता योजनायां स्वीकृता स्व।

~~26.~~ ~~त्वम्~~

26. iii) त्वमपि गच्छ।

iv) अहं गणितं विज्ञानं च पठामि।

v) मित्राय दुग्धं रोचते।

शिक्षक द्वारा दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

vi) अहं प्राज्ञः अस्मि।

27(i) पर्वतस्य पृष्ठतः ग्रामः अस्ति।

(ii) ग्रामे सुन्दराणि उपवनानि सन्ति।

(iii) मध्ये च भगवतः शिवस्य देवालयोऽस्ति।

(iv) ग्रामजनाः नद्यां तरन्ति।

(iv) पर्वतं निकषा एका नदी प्रवहति।

(v) ग्रामजनाः नद्यां तरन्ति।

(vi) ग्रामस्य विद्यालयः अतीव मनोहरः अस्ति।

28(i) एकदा एकः मकरः नद्यां वसति स्म।

(ii) नद्याः तटे फलोपेतः जम्बुवृक्षः आसीत।

(iii) तस्य शाखायां वानरः वसति स्म।

(iv) मकरः वानरेण पातितानि मधुरफलानि आस्वाद्य अचिन्तयत।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(v) फलानि अतिमधुराणि अतः वानरः हृदयन्तु अतीव मधुरं स्यात् अतः वानरः हृदयं खादामि।

(vi) वानरः मकरस्य प्रयासं बुद्धि-चातुर्येण विफलं विफलं कृतवान्।

समाप्त